सच्चा हिन्दुस्तान

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक – प्यारेलाल

अंक ३७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाभी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २० अक्तूबर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

चरखा कैसे चले ?

जिस तरह लोगोंके दिलोंमें कभी चीजोंकी लहरें अुठती हैं, अुसी तरह चरखे, तकली और गांधी-टोपीकी लहर भी अक्सर अुठा करती है। तब हजारोंकी तादादमें लोग ये चीजें खरीदने लगते हैं। वैसे देखा जाय, तो आज तक लाखों चरखे और तकलियाँ बनकर बिक गअीं, लेकिन आज अुनमेंसे कितनी चलती हैं? अगर सब नहीं चलतीं, तो हमें सोचना चाहिये कि अिसका कारण क्या है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि कातनेवालोंमें दिलचस्पी या रस कैसे पैदा किया जाय? कातनेमें दिलचस्पी न होनेके कारण तो कअी होंगे, लेकिन आज हम बड़े-बड़े कारणोंको ही देखें, और अुनका अिलाज ढूँढ़ें।

कुछ खास कारण ये हैं—

१. चरखेका ठीक तरहसे न बनना, और अुसमें कोअी-न-कोअी खराबी रह जाना।

२. चरखेके बिगड़ने पर अुसे दुरुस्त करनेकी जानकारी न होना।

३. बिकनेके बाद, बेचनेवालेका चरखेसे और अुसके खरीदारसे कोअी ताल्लुक न रहना।

४. अच्छी पूनियोंका न मिलना।

५. सूत बुनवानेका अिन्तजाम न होना।

अिन कारणोंसे कातनेवालोंका रस सूख जाता है। अुनकी दिलचस्पी मारी जाती है। अब हम देखें कि यह दिलचस्पी कायम कैसे रह सकती है?

हरअेक बिक्री-भण्डारमें अिस बातका अिन्तजाम किया जाय कि बिगड़ा हुआ चरखा वहाँ दुरुस्त हो सके, या अुसके बदलेमें नया चरखा दिया जा सके, और दाम कम-से-कम लिये जायँ।

हरअेक कातनेवाला चरखा दुरुस्त करनेका अिल्म भी हासिल कर ले।

भण्डारके रजिस्टरमें चरखेके खरीदारका नाम व पता रखा जाय।

नया चरखा बेचते वक्त अुसके साथ अेक परचा खरीदारको दिया जाय, जिसमें चरखा दुरुस्त करनेकी तरकीब लिखी हो। जब कोअी खरीदार टूटा या बिगड़ा हुआ चरखा भण्डारवालोंके पास लावे, तो वे वाजिब क़ीमत लेकर या मुफ़्तमें अुसे सुधार दिया करें। भण्डारसे बेचे गये सामानमें कोअी ग़लती रह गअी हो, तो शिकायत आने पर वह बदल दिया जाय।

पूनी बेचना बन्द किया जाय। कपास बेचा जाय, और तुनाअी सबको सिखाअी जाय।

जब तक बुनाअीके लिअे घर-घर करघा चलने न लगे, तब तक हमें बुनाअीका अिन्तजाम करना ही होगा।

मतलब यह है कि खादी-भण्डारोंको व्यापारीपन छोड़कर सच्चे सेवक और कारीगर बननेकी जरूरत है।

नअी दिल्ली, ९-१०-'४६

कनु गांधी

[श्री कनु गांधीका लेख सोचने लायक़ है। याद रहे कि चरखा पश्चिमकी छोटी या बड़ी चीजों जैसा नहीं है, और न वह वैसा हो सकता है। करोड़ों घड़ियाँ अेक जगह बनाअी जाती हैं। दुनियामें बिजली है। सीनेकी मशीनोंका भी यही अितिहास (तवारीख़) है। ये चीजें अेक सभ्यता (तहजीब)की निशानी हैं। चरखा अिससे अुलटी सभ्यताका प्रतीक (निशानी) है। हम अेक जगह सब चरखे बनाकर अुन्हें सारे हिन्दुस्तानमें फैलाना नहीं चाहते। हमारा आदर्श यह है कि देहातमें या शहरमें जहाँ कहीं कत्तिनें रहें, वहीं चरखा और वैसा दूसरा सामान बने। अिसीमें चरखेकी क़ीमत है। चरखेमें कुछ टूट-फूट हो जाय, तो अुसे दुरुस्त करना भी कत्तिनोंको सीख लेना चाहिये। ये सारे काम चरखा-संघके करनेके हैं। जब तक यह न होगा, खादी मिलके कपड़ेकी जगह न ले सकेगी।

मो० क० गांधी]

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६

विकेन्द्रीकरण

ता० ८, ९ और १० अक्तूबरके दिन दिल्लीमें चरखा-संघकी सभामें महत्त्वकी चर्चायें (बहस) हुअीं। चर्चाका अेक विषय (मजमून) विकेन्द्रीकरण था। विकेन्द्रीकरण खादीकी आत्मा है। चरखा-संघ यह चाहता है कि हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवोंमें चरखे और करघे चलें, हिन्दुस्तानके करोड़ों लोग खादी ही पहनें, और मिलोंका नाम-निशान न रहे।

अब वक़्त आ गया है, जब सूबे अिसके लिअे बिलकुल स्वतंत्र या आज़ाद होना चाहें, तो स्वतंत्र हो जायँ; सूबे न हों, या न हो सकें, तो जिले; जिले न हो सकें, तो ताल्लुके; और ताल्लुके न हो सकें, तो गाँवोंके छोटे-छोटे गिरोह; और वे भी न हो सकें, तो गाँव स्वतंत्र हो जायँ। हरअेक व्यक्ति तो अिसके लिअे स्वतंत्र है ही।

यहाँ यह सवाल न अुठना चाहिये कि यह कैसे हो? जो चरखा-संघके मातहत हैं, वे संघके मंत्रीको ब्योरेवार लिखें, ताकि अुसका फ़ैसला किया जा सके। जिनके पास संघकी मिल्कियत हो, अुन्हें पैसे लौटानेका कोअी अिन्तजाम करना पड़ेगा। जो संघकी नीतिको अपनायेंगे, अुनके लिअे नीतिका बन्धन रहेगा। अिस बन्धनको मंजूर करना किसीके लिअे लाजिमी नहीं। धर्म अुसीका, जो अुसका पालन करे। धर्म अेक ही नहीं होता। मूल या जड़ अेक होती है, पर शाखायें या डालें अनेक हैं। अनेक डालों पर अनेक पत्ते होते हैं। अेकतामें विविधता संसारका सुन्दर नियम या क़ानून है। अिसलिअे चरखा-संघकी नीति यह है कि विकेन्द्रीकरणको जितना बढ़ावा दिया जा सके, दिया जाय। शाखाओंके कामका तरीक़ा अैसा होना चाहिये, जिससे वे जितनी जल्दी स्वाधीनता या आज़ादी हासिल कर सकें, अुतनी जल्दी हासिल कर लें।

नअी दिल्ली, १६-१०-'४६
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

हिन्दुस्तानमें डेरीका धन्धा

डॉ० पेपरालने पिछले साल 'हिन्दुस्तानमें डेरीका धन्धा' नामकी अेक रिपोर्ट लिखी थी। गहराअीके साथ ग़ौर करने लायक़ अुसकी कुछ बातें नीचे दी जाती हैं। अिनमेंसे ज़्यादातर अैसी हैं, जो पहले 'हरिजनसेवक' में छपी नहीं हैं।

यह सवाल कितना बड़ा है, सो नीचे दिये गये आँकड़ोंसे साफ़ मालूम हो जायगा —

दूध पैदा करनेवालोंकी तादाद गाँवोंमें २ करोड़ १० लाख और शहरोंमें १ लाख ८० हज़ार है।

हिन्दुस्तानमें दूध देनेवाले मवेशी दुनियाकी कुल तादादके अेक तिहाअी यानी २१ करोड़ ९० लाख हैं।

अिसी तरह दूधके गाहकोंकी तादाद ४० करोड़ है।

डॉ० पेपराल शुरूमें ही यह मान लेते हैं कि हिन्दुस्तानमें गायके सवाल पर ग़ौर करते वक़्त गाँवोंको ध्यानमें रखना चाहिये। हिन्दुस्तानकी ज़रूरतें यूरोपसे जुदा हैं; मसलन, यहाँ गायको हमेशा दोहरी ज़रूरतें पूरी करनी होंगी।

१. दूध पैदा करनेके बारेमें वे अिन नतीजों पर पहुँचे हैं—

(अ) गायको खेतीके लिअे बैल पैदा करने और दूध देनेका दोहरा फ़र्ज़ अदा करना पड़ता है। अिसलिअे भैंस गायकी जगह नहीं ले सकती। वह गायके काममें मदद ही पहुँचा सकती है।

(आ) दूध बढ़ानेका काम, बाहरसे साँड़ मँगानेके बजाय यहाँ के साँड़ोंकी नस्ल सुधारकर ही, पूरा करना होगा। तजरबेसे यह मालूम हुआ है कि परदेसी साँड़का संकर अच्छा नहीं होता। सेवाग्राममें गौलाअू साँड़से नस्ल सुधारनेका जो काम हो रहा है, अुसे डॉ० पेपरालने पसन्द किया है। अुनकी अेक सिफ़ारिश यह भी है कि सरकारी फार्मोंमें पले-पुसे साँड़ चुनी हुअी नस्लोंके होने चाहियें। और, जहाँ तक अुनकी सार-सँभाल और अुनके अिस्तेमालका सवाल है, अुन्हें काफ़ी जानकार लोगोंकी देख-रेखमें रखना चाहिये।

(अि) अगर यह मान लिया जाय कि हिन्दुस्तानके गाँवोंकी हालत कम-से-कम अगले दस साल तक थोड़े फेर-फारके साथ आज-जैसी ही बनी रहेगी, और सिंचाअी व खेतीके लिअे, और अेक जगहसे दूसरी जगह सामान लाने-ले जाने, और सवारी वग़ैराके लिअे बैलोंकी ज़रूरत होगी, तो गायको अपना दोहरा काम करते ही रहना होगा।

२. रिपोर्टमें मवेशीको ठीकसे खिलाने पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है। डॉ० पेपराल कहते हैं—"अगर मवेशीको वैज्ञानिक (सायन्सदानी) तरीक़ेसे खिलानेके माप पर ग़ौर किया जाय, तो यही कहा जायगा कि हिन्दुस्तानके ज़्यादातर मवेशी भूखों मर रहे हैं।"

(अ) मवेशीको ठीक ढंगसे खिलाने-पिलानेके बारेमें गाँववालोंको तालीम दी जानी चाहिये। यह भी अेक शास्त्र (सायन्स) है।

(आ) लूसर्न घाससे बरसीम घास मवेशीको ज़्यादा फ़ायदा करती है, मगर अुसकी खूबियों पर काफ़ी तवज्जह नहीं दी गअी है।

(अि) छोटेसे मैदानमें बहुतसे मवेशियोंको चरनेके लिअे छोड़ देनेके बजाय चरागाहों पर अुगी हुअी घासको काट लेना ज़्यादा अच्छा है। जब हरा चारा मिलता हो, तो खली, बिनौलों और दूसरी अैसी चीज़ोंका कम अिस्तेमाल किया जाना चाहिये।

३. मवेशियोंके अिन्तज़ाम पर ठीकसे ध्यान नहीं दिया जाता।

(अ) "दूध देनेवाले मवेशियोंकी हालत काफ़ी बुरी है, मगर दूध न देनेवाले मवेशियों पर तो बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता।" अिसका अिलाज यही है कि ढोरोंके चरनेकी जगह बढ़ा दी जाय, और अुनके खानेकी चीज़ोंकी निकासी पर रोक लगा दी जाय। मवेशीके मालिकोंको ज़्यादा चारा-दाना ख़रीदने लायक़ बनानेके लिअे माली ज़रिये खोज निकालने होंगे। दूधका बहुत-सा नुक़सान तो अिसलिअे होता है कि यहाँ मवेशियोंको लम्बे अरसे तक बच्चे पैदा नहीं करने दिये जाते।

(आ) दूसरे मुल्कोंके तजरबेके बाद डॉ० पेपराल हिन्दुस्तानियोंके अिस दावेको नहीं मानते कि पैदा होनेके अेक या दो दिन बाद ही बछड़ोंका दूध नहीं छुड़ाया जा सकता। चूँकि बछड़ोंकी परवरिशके लिअे और चीज़ें मिल सकती हैं, अिसलिअे अुनका दूध जल्दी-से-जल्दी छुड़ा देनेके रिवाजको बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

(अि) दूध पैदा करनेवालोंको दूधका काफ़ी दाम मिलना चाहिये। आज तो दूधके भावमें फ़ी मन रु० १०)से लेकर ३०) तक घट-बढ़ होती रहती है। अिसका कोअी अैसा अिलाज करना चाहिये, जिससे आम लोगोंमें दूधके भावके बारेमें अितमीनान पैदा हो।

४. दूध पैदा करनेके साधनोंमें काफ़ी साफ़, हवादार और पक्की फ़र्शवाली परछियाँ ज़रूरी हैं। दूध निकालने, अुसे अिकट्ठा करने, और बरतनेमें सफ़ाअीका खूब ध्यान रखा जाना चाहिये। डॉ० पेपरालको यह देखकर बड़ा सदमा पहुँचा था कि "अिस मामलेमें लोगोंकी नासमझी और लापरवाहीकी वजहसे कअी जगह बे-हिसाब कचरा और गन्दगी पाअी गअी थी। लोगोंकी आदतें बहुत गन्दी और घिनौनी थीं। सरकारी अफ़सर भी अिस मामलेमें दिलचस्पी नहीं लेते थे।" हिन्दुस्तानमें न तो मवेशियोंके रहनेके लिअे अच्छे मकान हैं, और न अुन्हें पीनेके लिअे साफ़ पानी मिलता है। मवेशियोंके आस-पासकी गन्दगीकी कोअी हद नहीं। बाज़ारोंमें दूध खुले बरतनोंमें लाया जाता है। दूधका बाज़ार अैसे लोगोंसे घिरा रहता है, जो बड़े गन्दे तरीक़ेसे पान चबाते, तम्बाकू पीते और जगह-जगह थूकते रहते हैं। दूध ख़रीदनेवाले मज़ेसे दूधमें अुँगली डालकर अुसके गाढ़ेपनकी या अुसमें मिलाये गये पानीकी जाँच करते हैं। डॉ० पेपरालने जिन-जिन शहरों और गाँवोंका दौरा किया, अुनमेंसे ज़्यादातर पर यह बात लागू होती है। अिस बातका किसीको ख़याल ही नहीं होता कि दूध अेक अैसा क़ीमती आहार है, जो जल्दी ही बीमारीके कीड़े पकड़ लेता है। दूधको भी लोग ख़रीदनेकी दूसरी चीज़ों-जैसा ही समझ बैठे हैं। तो फिर अिसमें ताज्जुबकी कोअी बात नहीं कि बम्बअीके दूधकी जाँच करने पर वहाँकी सरकारी रिपोर्टमें अेक सेण्टीमीटर दूधमें बीमारीके क़रीब ३ करोड़ ६० लाख कीड़े बताये गये! अिस रिपोर्टको पढ़कर बहुत अफ़सोस होता है।

५. दूधमें मिलावटकी तो बात ही न पूछिये। यह अेक आम बीमारी है, जिस पर सख़्त रोक लगनी चाहिये। दूसरी बुराअियोंके साथ यह भी जुड़ी हुअी है। मिलावटसे 'पास्चराअिज़ेशन' (दूधको गरम करके अेकदम ठण्डा करनेका तरीक़ा, जिससे कीड़े मर जाते हैं, और दूध ज़्यादा देर तक टिका रहता है) बेकार हो जाता है। चूँकि दूध कच्ची हालतमें ५ या ६ घण्टेसे ज़्यादा नहीं टिक सकता, अिसलिअे अुसे जल्दी-से-जल्दी बेच देना चाहिये। चुनाँचे शहरोंके नजदीक़की जगहोंमें ही दूध ज़्यादा मिक़दारमें पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिये, और वहाँ स्पेशल रेलगाड़ियोंका अिन्तज़ाम होना चाहिये।

६. मिलिटरी डेरी फार्म, और दयालबाग-जैसी कुछ संस्थाओं, और शायद कुछ खानगी डेरी फार्मोंको छोड़कर हिन्दुस्तानमें डेरियाँ हैं ही नहीं। नअी डेरियाँ बननी चाहियें। अुनके लिअे जिन मामूली चीज़ोंकी ज़रूरत होती है, वे सब आसानीसे मुल्कमें बनाअी जा सकती हैं। डॉ० पेपरालका कहना है कि आम जनताकी माँगका ख़याल न रखकर सिर्फ़ मिलिटरी डेरी फार्मोंको बढ़ाते जाना ग़लत है। सारे मुल्कके लिअे खूराककी जो नीति या पॉलिसी बने, अुससे अिनका मेल बैठना चाहिये।

www.vinoba.in

७. अुनका ख़याल है कि शहरोंसे दूरके देहातमें दूधका पाअुडर वग़ैरा चीज़ें तैयार की जानी चाहियें। "पंजाब और सिन्धमें, जहाँ आबपाशी बहुत होती है, वहाँ खेती भी ख़ूब होगी और अिस वजहसे दूध भी ख़ूब होगा। अिन जगहोंमें अूपर कही गअी चीज़ें पैदा की जा सकती हैं।" वे पंजाबसे बाहर मवेशी भेजनेकी नीतिको क़तअी पसन्द नहीं करते। डॉ० पेपराल ग्राम-अुद्योगके तौर पर गाँवोंमें ही घी बनानेकी तहरीकको बढ़ावा देना चाहते हैं। अुनके ख़यालसे घी बनानेके लिअे दूध दूर-दूरके केन्द्रोंमें न भेजा जाय, और अिस तरह गाँववालोंको दूधकी छाछ वग़ैरा चीज़ोंसे महरूम न रक्खा जाय। अैसा करनेसे अुनकी ख़ूराकमेंसे अेक अच्छी चीज़ निकल जाती है। डॉ० पेपराल हिन्दुस्तानमें मक्खन बनानेकी राय नहीं देते, क्योंकि अैसा करनेसे पीनेका दूध ख़र्च हो जाता है। मक्खन और पनीर हमें आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्डसे मँगाना चाहिये।

८. डॉ० पेपराल दूधका अेक स्टैण्डर्ड या पैमाना क़ायम कर देनेके हक़में हैं। पर यह काम किसी ज़िम्मेदार संस्थाके ज़रिये होना चाहिये।

९. अुनका कहना है कि हिन्दुस्तानमें सस्ता दूध बेचनेकी योजनायें (स्कीमें) बनाअी जायँ। जब मुल्ककी सेहत और भलाअीका सवाल पेश हो, तो दूधकी क़ीमतकी बात गौण मानी जानी चाहिये। "आज हिन्दुस्तानमें जितने मवेशी हैं, अुन्हींको ठीकसे खिलाया-पिलाया जाय, तो अुनसे अितना दूध मिल सकता है कि सारे मुल्कमें बच्चेवाली हरअेक माँको और छोटे बच्चेको आधा सेर और बड़ेको पाव भर दूध रोज़ाना दिया जा सके।"

१०. आज दूधके भावमें जगह-जगह बड़ा फ़र्क़ दिखाअी देता है। यह बात ग़ौर करने लायक़ है कि बम्बअी और कलकत्तेमें दूधका भाव अिंग्लैण्डसे दुगना है। अुनकी सिफ़ारिश है कि दूध पैदा करनेवालोंके लिअे दूधकी दर मुक़र्रर कर दी जानी चाहिये। अगर अुन्हें यह भरोसा करा दिया जाय कि तयशुदा दाम अुन्हें हमेशा मिलते रहेंगे, तो दूधका भाव लाज़िमी तौर पर अूँचा रखना ज़रूरी न रहे। दूधके ख़रीदारोंके लिअे भी दूधकी कम-से-कम दर नियत की जा सकती है।

११. सरकारी मददके बारेमें डॉ० पेपरालकी राय है कि यह बड़े पैमाने पर दी जाय, लेकिन क़र्ज़की शकलमें।

१२. अख़ीरमें अुन्होंने रिसर्च या अनुसन्धान पर ज़ोर दिया है। अिस तरफ़ हिन्दुस्तानमें अभी तक बिलकुल ध्यान नहीं दिया गया है। अिस मामलेमें सबसे पहले हमें "जल्दी-से-जल्दी अिस बातकी जाँच करनी चाहिये कि काफ़ी चारेवाली जगहोंमें भी मवेशी दूध कम क्यों देते हैं? अुनका दूध बढ़ता क्यों नहीं? अिसका अिलाज ढूँढ़ना चाहिये।" अिस बातका भी वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिये कि "विदेशोंसे दूधकी बोतलें मँगानेके बजाय मुल्कमें ही किसी चीज़से दूध रखनेके अच्छे और सस्ते बरतन कैसे तैयार किये जा सकते हैं?"

डॉ० पेपरालकी जाँचसे नीचेकी बातें ज़ाहिर होती हैं —

(अ) मवेशी आधे भूखे रहते हैं।

(आ) मवेशियोंके रहने वग़ैराका अिन्तज़ाम अच्छा नहीं है।

(अि) दूधकी पैदाअिश दिन-दिन कम होती जाती है।

(अी) दूध पैदा करनेवाले ज़्यादातर अपढ़, क़र्ज़से लदे, और ग़रीब हैं।

(अु) दूधका भाव दुनियामें सबसे अूँचा है।

(अू) दूधकी आमदनीका औसत दुनियामें सबसे कम है।

(अे) दूधमें आमतौर पर सब जगह मिलावट की जाती है।

(अै) न तो सफ़ाअीके अुसूलोंकी जानकारी है, और न अुनकी तरफ़ ध्यान दिया जाता है।

(ओ) आमतौर पर बेअीमानी और बुराअियाँ फैली हुअी हैं।

(औ) आम जनता लापरवाह है।

(अं) अिस बारेमें पब्लिक संस्थायें गहरी लापरवाही दिखाती हैं।

(अः) डेरियोंकी और अुनके सामानकी कमी है।

अिस रिपोर्टसे यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि हिन्दुस्तानमें जल्दी ही दूधके बारेमें कोअी तयशुदा नीति बना लेना कितना ज़रूरी है। अगर अेक खेती-प्रधान मुल्कके लोगोंकी तन्दुरुस्तीको और अुसके मवेशी-धनको और ज़्यादा गिरने व बरबाद होनेसे बचाना है, तो केन्द्रीय (मरकज़ी) और सूबोंकी सरकारोंको जल्दी-से-जल्दी अिस मामलेको अपने हाथमें लेना चाहिये।

नअी दिल्ली, ४-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) अमृतकुँवर

डॉ० लोहिया

डॉ० लोहियाने गोआ हाअीकोर्टके चीफ़ जजको जो ख़त लिखा था, वह काफ़ी ग़ौर करने लायक़ है। रोज़ाना अख़बारसे मैं अुसकी नक़ल यहाँ देता हूँ—

"जहाँ तक मैं जानता हूँ, अपनी गिरफ़्तारीके वक़्त तक मैंने गोआका कोअी क़ानून नहीं तोड़ा था। चाहे मेरा वैसा अिरादा रहा हो, लेकिन यहाँ अुसकी चर्चा ग़ैरमौजूँ है। कोलममें वहाँके पुलिस अफ़सर सीधे मेरे डब्बेमें घुस आये, और बग़ैर कुछ कहे-सुने मुझे अेकदम गिरफ़्तार कर लिया। अपनी मौजूदा शकलमें अन्तर्राष्ट्रीय (मुल्कोंका) क़ानून शायद पुर्तगाल सरकारको यह अख़्तियार देता है कि वह जिसे परदेसी समझे और जिसका अपने यहाँ रहने देना पसन्द न करे, अुसे गिरफ़्तार करके देशनिकाला दे दे। लेकिन किसीको जेलमें रखनेका अुसे तब तक कोअी हक़ नहीं, जब तक वह अुसका कोअी क़ानून न तोड़े। अेक बार पहले भी पुर्तगाल सरकार मुझे परदेसी मान चुकी है, और मेरी तरफ़के अपने अिस रुखको वह अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनकी अेक दफ़ाकी बुनियाद पर सही मानती है। मुझे ग़ैरक़ानूनी तौर पर जेलमें रखनेके लिअे या तो वह मुझसे माफ़ी माँगे और मुझे हरजाना दे, या फिर गोआ और बाक़ी हिन्दुस्तानके बीच अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून जारी करनेकी अपनी ज़िद छोड़ दे। यही नहीं, बल्कि अुसने २९ सितम्बरसे २ अक्तूबर तक मुझे अेक अैसी कोठरीमें बन्द रक्खा, जिसमें सिर्फ़ अितनी हवा आती थी कि अिनसान साँस लेकर ज़िन्दा रह सके। अपने अिस बरतावके लिअे भी अुसे मुझसे माफ़ी माँगनी चाहिये और मुझे हरजाना देना चाहिये।

"मुझे अभी तक तनहाअीमें रखा गया है, हालाँ कि कुछ सहूलियतें बढ़ा दी गअी हैं। सिर्फ़ नहानेके वक़्त ही मुझको कोठरीसे बाहर निकाला जाता है। कोअी मुझसे मिलजुल नहीं सकता। अिन वजहोंसे मुझे क़ैदमें रखनेका जुर्म और बढ़ जाता है।"

डॉ० लोहियाने हरजानेकी जो माँग की है, अुसे कोअी हँसकर टाल न दे। अगर डॉ० लोहियाके पीछे अुनके मुल्ककी ताक़त होती, तो गोआकी सरकारको अुनसे माफ़ी माँगनी पड़ती, और वह हरजाना देनेके लिअे भी तैयार हो जाती। बड़ी-बड़ी ताक़तोंके लिअे यह कोअी ग़ैरमामूली बात नहीं है कि वे अपने छोटे-से-छोटे नागरिकोंको पहुँचाये गये नुक़सान या अुनकी बेअिज़्ज़तीके लिअे हरजाना माँगें और वसूल करें। डॉ० लोहिया कोअी मामूली आदमी नहीं। आज हिन्दुस्तानमें क़ौमी सरकार राज कर रही है। मुझे यक़ीन है कि दूसरी किसी सरकारकी तरह अुसे भी अैसी बातें अखरती होंगी। मुझे कोअी ताज्जुब न होगा, अगर अुसने अिस बारेमें अपनी शिकायत गोआ सरकारके सामने रक्खी हो, और अुसे अपना तरीक़ा सुधारनेकी ताक़ीद की हो। सो जो भी हो, गोआ सरकारकी ज़्यादतियोंके शिकार डॉ० राममनोहर लोहियाके और क़ौमी सरकारके पीछे लोकमत (अवामकी राय)की ताक़त होनी चाहिये। डॉ० लोहियाके साथ जो ज़्यादती की गअी है, वह गोआमें रहनेवाले तमाम हिन्दुस्तानियोंके साथ और अुनके ज़रिये समूचे हिन्दुस्तानके साथ की गअी है।

नअी दिल्ली, १३-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२० अक्तूबर १९४६

सच्चा हिन्दुस्तान

मैं सारे हिन्दुस्तानके गाँवोंमें घूमा हूँ। अगर अुनके बारेमें जानकारी हासिल करनेमें मुझे धोखा नहीं हुआ है, तो मैं अितमीनानसे कह सकता हूँ कि सात लाख गाँवोंको न तो पुलिसके ज़रिये बचाव मिलता है, और न अुन्हें अुसकी ज़रूरत ही है। अकेला पटेल ही, जो माँ-बाप सरकारका लगान वसूल करनेमें 'कलेक्टर'की मदद करता है, अुन पर हुकूमत करनेवाला ज़ालिम हाकिम है। मैं नहीं जानता कि गाँवमें डाका पड़ने पर कभी पुलिसने गाँववालोंके माल-असबाबकी और जानवरोंकी हिफ़ाज़त करनेमें अुनकी मदद की हो, या जंगली जानवरोंसे अुन्हें बचाया हो। पटेलकी अिस हालतके लिअे आज अुसे दोष नहीं दिया जा सकता। जिस कामके लिअे अुसे रखा गया है, अुसे वह बखूबी करता है। अुसे यह सिखाया ही कहाँ गया है कि वह अपनेको लोगोंका ख़िदमतगार समझे? वह तो अपने मालिक वाअिसरायका नुमाअिन्दा है। अूपर केन्द्रमें जो रद्दोबदल हो गया है, वह अभी नीचे गाँवों तक नहीं पहुँचा। और पहुँचे भी कैसे? वह फ़र्क़ नीचेसे थोड़े ही किया गया है? वाअिसरायके पास आज भी वह क़ानूनी और फ़ौजी ताक़त है, जिसके ज़रिये वे चाहें तो अपने वज़ीरोंको हटा सकते हैं और गिरफ़्तार भी करवा सकते हैं। वाअिसरायको गिरफ़्तार करनेके लिअे वज़ीरोंके पास कोअी क़ानूनी या दूसरी ताक़त नहीं। अभी तो सिविल सर्विस भी वाअिसरायके ही मातहत है। मैं यह नहीं कह रहा कि वाअिसराय अपने अधिकारोंको छोड़ना नहीं चाहते, या हिन्दुस्तानके दूर-से-दूरके देहातियोंको यह महसूस नहीं करने देना चाहते कि अुन्हें (वाअिसरायको) अिंग्लैण्डके सरकारी दफ़्तरसे यह हिदायत मिली है कि वे जल्दी-से-जल्दी हिन्दुस्तानसे अंग्रेज़ी हुकूमतका पूरी तरह अुठा लें।

यह सब लिखनेका मतलब यह है कि हम अभी तक अपने देहातसे, जहाँ असल हिन्दुस्तान रहता है, यह सबक़ नहीं सीखते कि हरअेक हिन्दुस्तानी, चाहे वह मर्द हो या औरत, ख़ुद अपना पुलिसमैन है। यह काम वह तभी कर सकता है, जब वह अपने पड़ोसीको, चाहे वह किसी धरमको मानता हो, नुक़सान पहुँचानेका ख़याल छोड़ दे। अगर बदक़िस्मतीसे कोअी सियासी दिमाग़का आदमी यह न कर सके, तो अुसे अितना तो करना ही चाहिये कि वह अपने दिलसे सारा ख़ौफ़ निकाल दे, और अपनी हिफ़ाज़तके लिअे पुलिस या फ़ौजकी मदद लेनेसे साफ़ अिनकार कर दे। मेरा यह पक्का ख़याल है कि जब तक हमारा हरअेक घर अपने आपमें अेक क़िला नहीं बन जाता, तब तक हिन्दुस्तान अपने पैरों खड़ा न हो सकेगा — पूरी तरह आज़ाद न बन सकेगा। यह क़िला तवारीख़के काले जमानेका क़िला न होगा, वरन् अुस बहुत पुराने जमानेका क़िला होगा, जब हर अिनसान दूसरेके ख़िलाफ़ बुरे ख़याल रखे बिना मर जाना जानता था, यानी मरते वक़्त वह अपने दिलमें यह ख़याल भी न रखता था कि चूँकि वह ख़ुद अपने हत्यारेको नहीं मार सकेगा, अिसलिअे दूसरा कोअी अुसे ज़रूर मार डालेगा। काश, यह सबक़ हम सबके दिलोंमें अच्छी तरह अंकित हो जाय! अिस सबक़के पीछे काफ़ी ताक़त हैं। कोअी अुसकी जाँच करनेकी तकलीफ़भर अुठानेवाला हो!

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

सवाल-जवाब

पोशाक अेक-सी कर दी जाय

"अिन पिछले चार हफ़्तोंमें मैंने अितनी ख़ूँरेज़ी और गोलीबार देखा है कि मेरे दिलपर अुसका बुरा असर रह गया है। जबसे दंगा शुरू हुआ है, मैंने मजिस्ट्रेटके नाते रोज़ शान्ति क़ायम करनेकी कोशिशकी है। अब मैं पहलेसे ज़्यादा अिस बातका क़ायल हो गया हूँ कि हरअेक हिन्दुस्तानी अेक ही तरहकी राष्ट्रीय या क़ौमी पोशाक पहने। आपको याद होगा कि मैंने पहले भी यह बात अुठाअी थी, पर अुस वक़्त आपने अिसे पसन्द नहीं किया था। क्या वजह है कि शर्ट और पैण्ट पहननेवाला अेक भी आदमी छुरेबाज़ीका शिकार नहीं हुआ? अिससे यह साफ़ तौरसे साबित होता है कि पोशाक मज़हबके भेदको और बढ़ा देती है। अगर आप 'हरिजन'में अिसका जवाब देंगे, तो मेरे-जैसे कअी लोगोंको, जो सोचते हैं कि अेक-सी पोशाक पहननेसे कौमी दंगे कुछ ही दिनोंमें बिलकुल बन्द हो जायँगे, अुससे ख़ुशी होगी।"

अेक बहुत विद्वान् और नेकदिल दोस्तका यह ख़त मैं छाप रहा हूँ। जिसमें ये तीनों गुण हों, यह ज़रूरी नहीं कि अुसके विचार भी सुलझे हुअे हों। आज हमें अेक-सी पोशाककी ज़रूरत नहीं; ज़रूरत है, अेक-से दिलोंकी। पोशाककी अेकता आजके अिस झमेलेसे निकलनेमें हमारी मदद करेगी, अिस दलीलके खोखलेपनको समझनेके लिअे आजके यूरोपकी हालत पर निगाह डालना काफ़ी होगा। दिलोंका दुराव अेक ज़हरी हवा है। यह दुराव मिटना चाहिये, और अुसकी जगह सद्भावकी साफ़ और ताज़ी हवा बहनी चाहिये।

तम्बाकूकी बुराअी

स० — शराबबन्दीके हक़में तो आप अक्सर बहुत ज़ोर देकर लिखते रहे हैं, लेकिन बीडी या तम्बाकू पीनेके बारेमें आपने अुतना ही या अुसी तरहके ज़ोरदार शब्दोंमें कभी नहीं लिखा। यह बुराअी बहुत चौंकानेवाली तेज़ीसे फैल रही है, और बच्चे भी बढ़ती तादादमें अिसके आदी बनते जा रहे हैं। आज तम्बाकू पीनेमें जो करोड़ों रुपये सचमुच फूँक दिये जाते हैं, वे हमारे अिस ग़रीब मुल्कमें अच्छे कामोंके लिअे बहुत अच्छी तरह खर्च किये जा सकते हैं।

ज० — यह अुलाहना सही है, पर नया नहीं। मैंने अिस पर ज़ोर देकर ज़्यादा नहीं लिखा, अुसका सबब यही समझा जाय कि तम्बाकू पीनेकी आदत अेक चौंकानेवाले रूपमें बड़प्पनकी निशानी बन गअी है। जब कोअी व्यसन या बुराअी अिस हद तक पहुँच जाती है, तो अुसे अुखाड़ फेंकना मुश्किल हो जाता है। अिसका यह मतलब नहीं कि हम अिस बुराअीके ख़िलाफ़ आवाज़ ही न अुठायें। सवाल यही है कि यह सब कब और कैसे किया जाय? मैं अफ़सोसके साथ क़बूल करता हूँ कि अिसका जवाब मुझे सूझ नहीं रहा।

दहेजका शाप

स० — ब्याह-शादीमें दहेजकी माँग दिन-दिन बढ़ती जा रही है। अिस अन्यायसे कोअी बचा नहीं। लड़केके पिता जितने धनी होते हैं, दहेजकी माँग भी अुतनी ही बढ़ जाती है। यह सवाल आज अितना टेढ़ा बन गया है कि शादीके लायक़ लड़कियोंकी शादी नहीं हो पाती। अिन लड़कियोंके माँ-बापकी हालतका बयान करनेके बजाय अुसका अन्दाज़ा लगा लेना ज़्यादा आसान है। सूबोंकी लोकप्रिय सरकारोंको चाहिये कि वे क़ानून बनाकर अिस बुराअीको रोकें।

ज० — अिन भाअीने अेक अजीब चीजकी तरफ़ अिशारा किया है। शिक्षा या तालीम समाजकी अिस हालतको न सिर्फ़ सुधारती नहीं, बल्कि ज़्यादा बिगाड़ती है। जिन लोगोंमें यह बुरा रिवाज मौजूद है, अुन्हें वक़्त रहते चेत जाना चाहिये, वरना यह अुन लोगोंको ही ख़त्म कर देगा, जो अपनी भयंकर कमज़ोरीकी वजहसे बेशरम बनकर अिससे चिपके हुअे हैं। अुन्हें लगातार बिना चैन लिअे अिसके ख़िलाफ़ आन्दोलन करते रहना चाहिये। दूसरा कोअी तरीक़ा मैं नहीं जानता।

www.vinoba.in

यह गुप्तता क्यों ?

स० — क्या आप बता सकते हैं कि जब मुल्कमें भाअी भाअीका खून कर रहा है, तब अखबारोंमें, मारे गये लोगोंकी जात क्यों छिपाअी जाती है ?

ज० — मैं क़बूल करता हूँ कि मेरे मनमें भी यह सवाल कअी बार अुठा है । अिस तरह सचाअीको छिपानेकी कोअी वजह मुझे नहीं मालूम होती, सिवा अिसके कि यह अुस नौकरशाहीकी अेक देन है, जिसकी जगह हमारी राष्ट्रीय सरकारोंने ली है। जिन्हें मालूम नहीं होना चाहिये, वे तो यह जान लेते हैं कि किसने किसे छुरा भोंका है, और जिन्हें जानना चाहिये, वे अँधेरेमें रक्खे जाते हैं । मुझे यक़ीन है कि हिन्दुस्तानमें कअी अैसे हिन्दू, मुसलमान या दूसरी जातियोंके लोग हैं, जो हमेशा अपनेको हिन्दुस्तानी कहनेमें फ़ख़्र या गौरव महसूस करते हैं । यह कहना ग़लत होगा कि अैसा करनेवाले अपने धर्मके सच्चे पाबन्द नहीं होते । वे लोग हमेशा अिस कोशिशमें रहते हैं कि मजहबके जोशमें अन्धे बन जानेवाले लोगोंको शरारत करनेसे रोकें । मैं अैसे कअी लोगोंको जानता हूँ । अुनके पास अखबारोंके सिवा सही बातें जाननेका दूसरा कोअी जरिया नहीं रहता । अिस अँधेरे पर रोशनी डाली जानी चाहिये, तभी यह जल्दी मिटेगा ।

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६

(अंग्रेजीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

हिन्दू पानी और मुसलमान पानी

जब कोअी परदेसी आदमी हिन्दुस्तानकी रेलगाड़ियोंमें सफ़र करते वक़्त अपनी जिन्दगीमें पहली बार पानी, चाय और अैसी ही दूसरी चीजोंके साथ हिन्दू या मुसलमानकी हँसी लानेवाली पुकारें सुनता होगा, तो अुसे सहज ही अेक दर्दभरा धक्का-सा लगता होगा । चूँकि अब केन्द्रमें पूरी-पूरी क़ौमी-सरकार बन गअी है, और आसफ़अली साहब-जैसे मशहूर हिन्दुस्तानी, रेलवे और यातायात विभागके वजीर हैं, अिस चीजका बना रहना बहुत भद्दा मालूम होगा । हमें अुम्मीद करनी चाहिये कि यह शर्मनाक चीज, जो सिर्फ़ हिन्दुस्तानकी अपनी ख़ासियत है, बहुत जल्द ख़त्म कर दी जायगी । कोअी यह न सोचें कि चूँकि रेलें अेक मुसलमानके मातहत हैं, अिसलिअे हिन्दुओंके साथ अिन्साफ़ न होगा । केन्द्रीय (मरकजी) या सूबोंकी सरकारोंमें हिन्दू-मुसलमानका या दूसरा कोअी क़ौमी भेदभाव न होना चाहिये । सभी हिन्दुस्तानी हैं । मजहब तो अेक निजी मामला है । अिसके सिवा, हमारी कैबिनेटके मेम्बरोंने अेक बहुत अच्छा सिलसिला चला दिया है । अपने दिन भरके कामके बाद वे सब राज शामको मिलते हैं, और किसने क्या किया है, अिस पर गौर करते हैं । यह अेक मिलाजुला काम है, जिसमें सब मेम्बर अेक साथ और अलग-अलग अेक दूसरेके कामके लिअे जिम्मेदार हैं । कोअी मेम्बर यह नहीं कह सकता कि चूँकि कोअी खास चीज अुसके महकमेसे ताल्लुक़ नहीं रखती, अिसलिअे वह अुसके लिअे जिम्मेवार नहीं । चुनाँचे हमें यह मानकर चलनेका हक़ है कि रेलवे स्टेशनों पर हर क़ौमके लिअे हर चीज अलगसे बेचनेका यह नापाक तरीक़ा बन्द कर दिया जायगा । सफ़ाअीका पूरा-पूरा खयाल रखनेका अुसूल तो सबके लिअे जरूरी है । अगर सब तरहकी पनीली या तरल चीजोंके लिअे टोंटियोंवाले बरतनोंका अिंतजाम रहे, तो अुनसे अपनी जरूरतकी चीजें खुद ले लेनेमें किसी पुराने खयालके आदमीको भी कोअी परहेज न होना चाहिये । जो बहुत परहेजी हैं, वे अपना प्याला या लोटा अपने साथ रखें, और अुसीमें दूध, चाय, कॉफी या पानी टोंटीसे ले लिया करें । अिसमें तो किसीका मजहब नहीं बिगड़ता । फिर, रेलवे-स्टेशनों पर चीजें खरीदना किसीके लिअे लाजिमी नहीं । असलमें बहुतसे पुराने खयालके लोग तो सफ़रमें न पानी पीते हैं, न खाना खाते हैं । वे अुपासे रह लेते हैं । ग़नीमत है कि हम अभी अेक ही हवा खाते हैं, और अेक ही धरतीमाता पर चलते-फिरते हैं ।

कम-से-कम रेलवे-स्टेशनों पर तो ये सब क़ौमी पुकारें ग़ैरकानूनी कर दी जानी चाहियें ।

जैसा कि मैंने अिन पन्नोंमें कअी दफ़ा कहा है, रेलगाड़ियों और जहाजोंके जरिये अमली तौर पर लाखों-करोड़ों मुसाफ़िरोंको हद दरजेकी सफ़ाअी, सेहत और तन्दुरुस्तीके नियम सिखाये जा सकते हैं, और हिन्दुस्तानकी अलग-अलग जातियोंमें भाअीचारा भी पैदा किया जा सकता है । हम अुम्मीद करें कि अिस बहुत जरूरी सुधारको सफल बनानेमें कैबिनेट या मंत्रि-मण्डल अपने अक़ीदे (विश्वास)के मुताबिक़ काम करनेकी हिम्मत दिखायेगा, और अुसे रेलवेके कारकुनों और आम जनताकी भी पूरी-पूरी और दिली मदद मिलेगी ।

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६

(अंग्रेजीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

गले लगकर मरे

हालकी अेक खबर है कि बम्बअीमें अेक हिन्दूने अपने अेक मुसलमान दोस्तको आसरा दिया । अिससे हिन्दुओंका अेक दल भड़क अुठा और अुसने कहा—"अपने मुस्लिम दोस्तको हमें सौंप दो!" हिन्दूने अपने दोस्तको सौंपनेसे अिनकार किया । अिसपर दोनों दोस्त मौतके घाट अुतार दिये गये । मरते वक़्त दोनों अेक-दूसरेको गले लगाये हुअे थे । अेक जानकारने मुझे बिलकुल अिसी तरह यह खबर सुनाअी थी । अिस खूँख़्वारीके बीच अिस तरहकी यह पहली ही मिसाल नहीं है । पिछले दिनों कलकत्तेमें खूनकी जो नदियाँ बहीं, अुनमें भी कअी जगह हिन्दुओंने मुसलमान दोस्तोंको और मुसलमानोंने हिन्दू दोस्तोंको अपनी जान पर खेलकर आसरा दिया था । अिनसानमें देव या फ़रिश्तेका जो अंश है, अगर अुसकी झलक किसी भी वक़्त और कहीं भी न दिखाअी दे, तो अिनसानियत (मानवता) मर जाय ।

बम्बअीके वजीरे-आजम श्री बाला साहब खेरने बहुत जोरदार शब्दोंमें दो अैसे नौजवानोंकी मिसालका बयान किया है, जो यह जानते हुअे भी कि वे जरूर मार डाले जायँगे, अेक मुस्लिम-भीड़का गुस्सा ठण्डा करनेके लिअे दौड़ पड़े थे । मौतको अुन्होंने सच्चे दोस्तकी तरह अपनाया । अैसी पाक कुरबानीकी क़ीमत बेअन्दाज है । कोअी हलके तरीक़ेसे अुसका मजाक न अुड़ाये । अगर अैसी हरअेक कुरबानीका नतीजा कामयाबी (सफलता) हो, तो जान पर खेल जाना हँसी-खेल बन जाय । ये घटनाअें हमको यही सबक़ देती हैं कि अगर अैसे क़िस्से काफ़ी तादादमें हमारे सामने आयें, तो मजहबके नाम पर होनेवाली यह बेवकूफ़ीभरी मार-काट बन्द हो जाय । सबसे जरूरी शर्त यह है कि अिसमें कहीं दिखावा या नक़ली बहादुरी न हो । हम जैसे हैं, वैसे ही दिखनेकी कोशिश करें ।

नअी दिल्ली, १५-१०-'४६

(अंग्रेजीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

नअी किताबें	मूल्य	डाकखर्च
अीशु ख्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-०
रचनात्मक कार्यक्रम — अुसका रहस्य और स्थान (नअी और सुधरी हुअी आवृत्ति (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
अेक धर्मयुद्ध — (महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी)	०-८-०	०-२-०
हिन्दुस्तानी बाल-पाठावली	०-५-०	०-१-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

www.vinoba.in

हफ़्तेवार ख़त

सरकारी मालिकी बनाम सरकारी कण्ट्रोल

ता० ८, ९ और १० अक्तूबरको हरिजन कॉलनी, किंग्सवे, नअी दिल्लीमें अखिल भारत-चरखा-संघकी सालाना बैठक हुअी। क़रीब ८० मेम्बर हाजिर थे। बहसोंकी अेक ख़ासियत यह थी कि कअी चीजें जो आज तक सिर्फ़ हवाअी समझी जाती थीं, अपनी सरकारोंके आनेसे वही अब अमली शकल ले रही हैं। चर्चाका अेक विषय यह था कि मिलका कपड़ा खादीके साथ मुक़ाबला न करे। अिसलिअे कुछ चुनी हुअी जगहोंमें मिलका कपड़ा जाने न दिया जाय, और वहाँ कपड़ेकी नअी मिलें खड़ी न की जायँ; क्योंकि मिलके मुक़ाबलेमें खादी ज़िन्दा नहीं रह सकती। गांधीजीने सुझाया कि जहाँ लोग वस्त्र-स्वावलम्बनका प्रयोग करनेको तैयार हों, वहाँ सरकार मिलका कपड़ा न जाने दे। अिसी तरह अगर सरकारें नअी मिलें खड़ी करनेमें करोड़ों रुपये खर्च करेंगी, तो देहातवाले खादीके बारेमें अुनकी बात नहीं सुनेंगे। वे समझ जायँगे कि असल चीज़ तो मिल ही है। चुनाँचे अगर सरकारें सचमुच ही खादीको बढ़ाना चाहती हों, तो अुन्हें अपने यहाँ नअी मिलें न बनानेका फ़ैसला करना ही होगा।

अेक मेम्बरने प्रस्ताव पेश किया कि कपड़ेकी नअी मिलों पर सरकारका क़ब्ज़ा हो, और जितनी जल्दी हो सके, सरकार पुरानी मिलों पर भी क़ब्ज़ा कर ले, ताकि अुनका मुनाफ़ा पूँजीपतियोंके बदले मुल्कके जेबमें पहुँचे, और मिलोंकी नीति पर भी जनताका क़ाबू हो। अिस पर गांधीजीने समझाया कि जब वे सरकारसे अेक तरफ़ यह कहते हैं कि खादीका प्रचार करना हो, तो कपड़ेकी नअी मिलें खड़ी ही न करनी चाहियें, तब दूसरी तरफ़ अुससे नअी और पुरानी मिलोंका राष्ट्रीयकरण करनेकी बात कहना ठीक नहीं। मद्रासके प्रधान-मंत्री श्री टी० प्रकाशमूने तो अैलान भी कर दिया है कि उनके सूबेमें कपड़ेकी नई मिलें खड़ी नहीं की जायँगी। रही पुरानी मिलों पर सरकारी क़ब्ज़ेकी बात, सो मुझे तो क़ब्ज़ा लेनेके बजाय सरकारकी कड़ी देख-रेखमें अुनका चलना ही ज़्यादा अच्छा लगेगा। आज क़ब्ज़ा लेनेके लिए सरकारके पास सामान नहीं है। हम तो सब काम शान्तिसे करना चाहते हैं। अगर हम मिल-मालिकोंको अपना ट्रस्टी बना लें, तो वे और अुनके कारकुन अपने-आप हमारे ताबेमें आ जाते हैं। मिल-मालिक मिल चलावेंगे, मगर मुनाफ़ेका अुतना ही हिस्सा अुनके जेबमें जायगा, जो अुनकी मेहनतके बदले, लोग अुन्हें देना ठीक समझेंगे। सच्चे मालिक मज़दूर होंगे। मैंने सुना है कि श्री टाटाकी अेक मिल में मज़दूरों को मुनाफ़ेमें साझा मिला है। श्री जे० आर० डी० टाटाने मुनाफ़ा बाँटने के मौक़े पर जो भाषण किया था, वह पढ़ने लायक़ है। अिससे बढ़कर क़ब्ज़ा और क्या लिया जा सकता है? अिससे आगे जाने की बात मेरे दिमाग़ में नहीं आती। कअी मिल-मालिकोंने मुझसे कहा है कि अगर हम अैसी कोअी योजना बनावें, तो वे हमारे साथ रहेंगे। मिलों पर सरकार, चरखा-संघ और मिल-मालिकों का क़ाबू होने की बात मेरे गले नहीं अुतरती। हमारा काम मिल चलाना नहीं, चरखा चलाना है। जो चीज़ हमारे दायरे की नहीं, अुसकी चर्चा में अितना वक़्त क्यों दें? अगर सब-की-सब मिलें आज जलकर ख़ाक हो जायँ, तो मुझे ज़रा भी रंज न होगा। अिसके बाद खादी को बढ़ना ही है। लेकिन अगर मिलें बढ़ेंगी, तो खादी को मरना होगा। ग़रीबोंकी अन्नपूर्णा (रोटी देनेवाली) के नाते थोड़ी-बहुत खादी तब भी चल सकती है। पर अुसके लिअे चरखा-संघ-जैसी बड़ी संस्था की ज़रूरत न रहेगी। मेरे लिअे तो अितना ही काफ़ी है कि सूबों की सरकारें मिलों के बारे में अपनी नीति ठहराते वक़्त हमारी सलाह ले लिया करें।

पैसेकी मददका सवाल

खादीको पैसेकी मदद देनेके सवाल पर भी चर्चा हुअी। हाथ-कते सूतकी बुनाअीका सवाल बहुत मुश्किल बन रहा है। हाथ-करघा चलानेवाले जुलाहे मिलका सूत बुनना पसन्द करते हैं। बुनाअीके दाम अितने बढ़ गये हैं कि वस्त्र-स्वावलम्बन बहुत महँगा पड़ता है। श्री जाजूजीने सवाल अुठाया कि अगर सरकार अपने लिअे कातनेवालोंको सस्ते दामों कपड़ा बुनवा दे, तो क्या वस्त्र-स्वावलम्बनके लिअे अितनी मदद लेना ठीक न होगा? गांधीजीने जवाब दिया कि वे सरकारसे रूअी माँग सकते हैं, जरूरी सामान माँग सकते हैं, जो अपने लिअे कातना चाहें, अुनको कताअीकी मुफ़्त तालीम देनेका अिन्तज़ाम भी सरकारसे करवा सकते हैं; मगर मैं यह नहीं कहलाना चाहता कि चूँकि चरखा-संघ अेक बड़ी संस्था है, अिसलिअे अुसने सरकारी रुपया अुड़ाया। मैं तो यह कहलाना चाहता हूँ कि चरखा-संघको सरकारने कुछ दिया ही नहीं, और जो कुछ दिया अुसका दस गुना वापस पाया।

मजबूरी नहीं

अेक दूसरे मेम्बरने सुझाया कि बुनकरोंसे कहा जाय कि जब तक वे थोड़ा हाथ-कता सूत नहीं बुनेंगे, अुन्हें मिलके सूतका कोटा नहीं दिया जायगा। अिस पर गांधीजीने कहा—"अगर खादीके मामलेमें आप किसी तरहकी मजबूरी दाखिल करेंगे, तो अुससे खादीके लिअे लोगोंमें नफ़रत ही पैदा होगी। तब खादी आज़ादीकी वर्दी नहीं रहेगी। आज आज़ादीकी हवा बह रही है। बुनकर ज़बरदस्ती कुछ करनेसे अिनकार कर सकते हैं।"

जाजूजीने दलील की—"आज तो कपड़ा और ख़ूराक वग़ैरा हर चीज़ पर कण्ट्रोल है। बुनकरों पर भी किसी क़िस्मका कण्ट्रोल क्यों न रखा जाय?"

गांधीजीने जवाब दिया—"मुझे यह अच्छा नहीं लगता। हमने कत्तिनोंको किसी तरह मजबूर नहीं किया। बुनकरोंको भी क्यों करें? हमें अिस कठिनाअीकी जड़ ढूँढ़नी चाहिये। पहली ग़लती तो हमारी यह थी कि हमने कताअी पर तो ज़ोर दिया, मगर बुनाअी पर नहीं दिया। अगर हमने बुनाअीको भी कताअीकी तरह अपनाया होता, तो ये कठिनाअियाँ खड़ी ही न होतीं। अब अिलाज यह है कि हम अच्छा सूत कातें, ताकि बुनकरोंको हाथ-कता सूत बुननेमें कम-से-कम तकलीफ़ हो। हम बुनकरोंको समझावें कि मिलका सूत बुनकर वे अपने बच्चोंका गला काट रहे हैं। मिल-मालिक, दूसरोंको फ़ायदा पहुँचानेके अिरादेसे, परोपकार वृत्तिसे, काम नहीं करते। अगर मिलें बढ़ीं, तो आखिर बुनकरोंका धन्धा बैठ जायगा। अगर चरखेमें हमारी श्रद्धा (अेतक़ाद) क़ायम है, तो हमें अिन दिक़्क़तोंसे घबराना न चाहिये। धीरे-धीरे हाथका कता सूत बुननेवाले करघे बढ़ेंगे। हमारे पास अितने कारीगर हैं, और अितनी कला है कि हम अपनी जरूरतका सब कपड़ा अपने हाथों तैयार कर सकते हैं।"

चींटीकी चाल

जाजूजी—अिसका मतलब यह हुआ कि हमारा काम पहलेकी तरह चींटीकी चालसे आगे बढ़ेगा। थोड़े समयमें चार लाख लोगोंके लिअे वस्त्र-स्वावलम्बनकी हमारी योजना (स्कीम) अिस तरह सफल नहीं हो सकती।

गांधीजी—अगर हमारी स्कीम क़ामयाब नहीं होती, तो अिसमें दोष हमारा ही होगा।

जाजूजी—यह ठीक है। मगर बाहरी हालात या परिस्थितिका भी असर तो होता ही है। हम जिस दुनियामें रहते हैं, अुसका असर हम पर पड़े बिना नहीं रहता।

गांधीजी—बाहरी हालात पर क़ाबू पाना अिनसानका काम है। आजका जमाना ही परिस्थिति पर क़ाबू पानेका है। अगर परिस्थितिको

www.vinoba.in

क़ाबूमें न लाया जाता, तो जर्मनी और जापान ज़रूर जीत जाते। अिसके बारेमें हम अंग्रेज़ोंसे सबक़ लें। वे कभी हार नहीं मानते। हमें अपने जीवनको यज्ञमय बनाना होगा। अैसी कोअी चीज़ नहीं, जिसे तपस्याके ज़रिये अिनसान पा न सके।

अप्रमाणित खादी और मिलका कपड़ा

सवाल — आपनेही हमें सिखाया है कि जहाँ धोखा हो, वहाँ न जाओ। खादी पहननेकी शर्तोंका पालन किये बिना, अप्रमाणित खादी पहनकर खादीधारी कहलाना क्या धोखेबाज़ी नहीं? क्या अीमानदारीके साथ मिलका कपड़ा पहनना बेहतर नहीं?

गांधीजी ने जवाब दिया — यह न सोचिये कि मुझे अप्रमाणित खादी अच्छी लगती है। मगर अप्रमाणित होने पर भी जब तक वह असल खादी है, तब तक मिल के कपड़े से अच्छी ही है। यह कहना कि अप्रमाणित खादी हर हालत में त्याज्य ही है, ठीक नहीं। मसलन्, जो लोग खुद सूत कातकर अुसका कपड़ा बुनवाते हैं, अुनके पास प्रमाण-पत्र नहीं रहता, मगर अुनकी खादी शुद्ध खादी होती है। प्रमाणित खादी का मतलब यह है कि अुसमें कत्तिनों को चरखा-संघ की तय की हुअी कताअी मिलती है, और संघ के दूसरे नियमों का पालन होता है। मगर चरखा-संघ के नियम के मुताबिक़ कताअी न देने पर भी मिल के कपड़े से तो वह खादी अच्छी ही होगी। देखने में भले यह जान पड़े कि मिल के मज़दूरों को ज़्यादा मज़दूरी मिलती है, मगर दर असल मिल के मज़दूर खादी के मज़दूरों की बनिस्बत नुक़सान में रहते हैं। आज मिल का कपड़ा खादी से २½ गुना सस्ता है। मगर जानकार लोगों ने मुझे बताया है कि मिलों को जो तरह तरह की रिआयतें आज मिली हुअी हैं, वे बन्द कर दी जायँ, तो मिल का कपड़ा खादी से सस्ता नहीं पड़ेगा। मसलन्, मिलों को सस्ते दामों में कच्चा और पक्का माल लाने और भेजने के लिअे कम रेट में रेलों की सहूलियतें दी गअी हैं। अुनके लिअे पक्के रास्ते बनाये जाते हैं, और लम्बे रेशेवाली कपास अुगाने, टेकनिकल अिन्स्टिट्यूट खोलने, और रिसर्च वग़ैरा करने में करोड़ों रुपये ख़र्च किये जाते हैं। सात लाख गाँवों में से किसी के लिअे भी अिनमें की कोअी बात कभी की गअी है? मिलों को तो किसी-न-किसी रूप में आज सरकारी मदद मिल ही रही है। वह सब बन्द कर दीजिये और फिर देखिये कि मिल का कपड़ा खादी से सस्ता है या महँगा।

मैं अप्रमाणित खादीको बढ़ाना नहीं चाहता, मगर मिलके कपड़ेको तो बरदाश्त ही नहीं कर सकता। अेक दिन अैसा भी आ सकता है, जब चरखा-संघ प्रमाण-पत्र देना बन्द कर दे। अुस समय संघ खादीकी नीति या पॉलिसीकी रखवाली करेगा, और खादीका व्यापार करना बन्द कर देगा। लोगोंको अीमानदार और होशियार बनना पड़ेगा, ताकि खादीके नामसे दूसरा कपड़ा ख़रीदा और बेचा न जा सके। मैंने चरखे और खादीको अहिंसाकी निशानी कहा है, मगर मैं सुनता हूँ कि प्रमाणित खादी-भण्डारोंमें भी बेअीमानी चलती है। मेरी दिली ख़ाहिश है कि खादी काले-बाज़ारसे और दूसरी सब तरहकी बेअीमानीसे अूपर रहे। मगर कहीं-कहीं तो यह चलता ही है। खादीको अहिंसाकी निशानी बनाना हमारा काम है।

मैंने अिस बात पर ज़ोर दिया है कि वेजीटेबल घीको घी न कहा जाय। वह घी नहीं, तेल है। अिसी तरह जो कपड़ा हाथ-कता और हाथ-बुना नहीं है, अुसका खादीके नामसे चलना बरदाश्त नहीं किया जा सकता। आख़िरी अिलाज तो ख़रीदारोंके हाथमें है। अुन्हें अंग्रेज़ीकी यह कहावत हमेशा याद रखनी चाहिये — 'ख़रीदार, ख़बरदार!'

अेक कड़ी कसौटी

अेक दिन आम सभामें की गअी अपनी अेक तक़रीरमें गांधीजीने कहा था कि मेरी कल्पनाका सार्वजनिक जीवन अेक तरहकी कसौटी है, और अुसमें आदमी अपने भीतरकी अूँची-से-अूँची आध्यात्मिक (रूहानी) ख़ूबियोंका विकास कर सकता है। यह कसौटी कितनी कड़ी हो सकती है, अिसका सबूत अुन्हें और हम सबको भी अुस दिन मिला, जब अिस हफ़्ते अुनके ज़िम्मेदारी भरे काममें अेक नाज़ुक मौक़ा आ गया। अुन्होंने अेक मज़मूनका कुछ हिस्सा पढ़कर अुसे ज़रूरतसे ज़्यादा जल्दीमें पास कर दिया, जब कि जल्दबाज़ीका कोअी मौक़ा नहीं था। अुन्हें लगा, सब ठीक है, हालाँकि बात ठीक नहीं थी। भाग्यसे ग़लती वक़्त रहते पकड़ ली गअी और अुससे काअी नुक़सान न हुआ। लेकिन अिस बातने गांधीजीको बुरी तरह झकझोर दिया। अुन्होंने कहा — "अपनी अितनी लम्बी ज़िन्दगीमें मेरे लिअे अिस तरहका यह पहला तजरबा है। क्या यह अिस बातकी निशानी है कि ७८ सालकी अिस अुमरमें मेरा दिमाग़ कमज़ोर हो गया है?" अुन्होंने अपनी अन्तरात्माकी अदालतमें अपना मामला पेश किया और अपने-आप पर सख़्त लापरवाहीका अिलज़ाम लगाया, जो सार्वजनिक काम करनेवालेके लिअे बड़ा जुर्म है। लेकिन जब अिससे भी अुन्हें तसल्ली न हुअी, तो अुन्होंने शामकी प्रार्थना-सभामें सबके सामने अपनी ग़लती क़बूल करते हुअे बहुत बारीकीसे अुसकी छानबीन की।

ग़लती क़बूल करनेका महत्त्व

अुन्होंने कहा — "मैं हमेशा अिस कहावतके मुताबिक़ चला हूँ कि अिनसानको चाहिये कि शाम होनेसे पहले ही वह अपनी ग़लती क़बूल कर ले। ग़लती हर अिनसानसे होती है। लेकिन जब अिनसान अपनी ग़लतीको छिपाता है या अुस पर मुलम्मा चढ़ानेके लिअे और झूठ बोलता है, तो वह ख़तरनाक बन जाती है। जब किसी फोड़ेमें पीव पड़ जाता है, तो हम अुसे दबाकर ज़हरीले पीवको बाहर निकाल देते हैं और फोड़ा बैठ जाता है। लेकिन अगर वही ज़हर बदनके अन्दर फैल जाय, तो मौत होकर ही रहे। बरसों पहले साबरमती आश्रममें कअियोंको चेचककी बीमारी हुअी थी। जितने लोगोंको चेचक अुभर आअी थी, वे तो मौतसे बच गये। लेकिन अुनमेंसे अेकको चेचक अुठी ही नहीं; अुसका सारा जिस्म सूजकर लाल हो गया और वह बेचारा मर गया। यही हाल ग़लती और पापका होता है। पता चलते ही किसी ग़लती या पापको क़बूल कर लेनेके मानी हैं, अुसे ज़हर निकाल फेंकना।"

गांधीजीने आगे कहा — "अपनी सारी ज़िन्दगी में मैंने अैसा ही किया है। अिसलिअे जब अिस बार भी मुझे अपनी ग़लती मालूम हुअी, तो मैंने फ़ौरन अपने साथियोंसे कह दिया। तिस पर भी मुझे तब तक चैन नहीं, जब तक आपके ज़रिये मैं सारी दुनिया के सामने अपनी ग़लती क़बूल न कर लूँ। अिस पर कुछ मित्र कह सकते हैं कि यह कोअी पाप नहीं, बल्कि अेक छोटी-सी ग़लती थी। लेकिन मैं ग़लती और पाप में कोअी फ़र्क़ नहीं मानता। अगर अिनसान सच्चे भावसे कोअी ग़लती कर जाता है, और पश्चात्तापपूर्वक अपने अीश्वर के सामने अुसे क़बूल कर लेता है, तो दयालु परमात्मा अुसकी ग़लती से किसीका नुक़सान नहीं होने देता। अपनी सारी ज़िन्दगी में मुझे अेक भी अैसी मिसाल याद नहीं पड़ती, जब मेरी सद्भावसे की गअी ग़लतियोंसे कभी किसीको नुक़सान पहुँचा हो।"

गांधीजीने अपने-आपसे पूछा — "अिस ग़लतीके लिअे मैं क्या प्रायश्चित्त करूँ?" और ख़ुद जवाब देते हुअे कहा — "मुझे यह पक्का निश्चय कर लेना चाहिये कि फिर अैसी ग़लती कभी न होने दूँगा। ग़लती के लिअे प्रायश्चित्त करनेका यही सच्चा तरीक़ा है।"

मरते वक़्तका प्रायश्चित्त

"अंग्रेज़ोंमें अेक कहावत है कि दुनियामें कोअी अिनसान अितना बुरा नहीं होता कि कभी सुधर ही न सके — सिर्फ़ अुसके मनमें सुधरनेकी ख़ाहिश होनी चाहिये। अगर मरते-मरते भी कोअी बड़े-से

www.vinoba.in

बड़ा पापी अपना पाप क़बूल करके अुसके लिअे पछताता है, तो भगवान् अुसे ज़रूर माफ़ कर देता है। भगवान्‌की यह प्रतिज्ञा है। पुनर्जन्ममें और जन्मजन्मान्तर तक कर्मका फल भोगनेमें मेरा विश्वास है। अिस जन्ममें हम जैसा करेंगे, वैसा ही अगले जन्ममें भरेंगे—अुससे हम बच नहीं सकते। लेकिन अगर कोअी अिनसान मरते वक़्त भी अपने पापके लिअे पछताता है, तो वह पाप धुल जाता है, और अुसका कोअी बुरा नतीजा नहीं निकलता। आप सब अीश्वरसे मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये कि अपनी ज़िन्दगीमें फिर कभी मैं अैसी ग़लती न करूँ।"

आख़िरमें गांधीजीने कहा—"मुझे अुम्मीद है कि आप सब मेरी अिस मिसालसे सबक़ लेंगे और अपने काममें कभी जल्दबाज़ी या लापरवाही नहीं करेंगे। आपके सामने अपनी ग़लती क़बूल कर लेनेसे मेरे मनका बोझ तो अुतर गया, लेकिन अिसने मेरे १२५ बरस तक जीनेके विश्वासको बुरी तरह हिला दिया है। मेरे अिस आत्म-विश्वासको लौटनेमें शायद काफ़ी वक़्त लग जायगा।" अपने आत्म-निरीक्षणकी मददके लिअे और अपनी ताक़त बनाये रखनेके ख़यालसे गांधीजीने रोज़मर्राके कामोंके लिअे अनिश्चित काल तक न बोलनेका फ़ैसला किया है। आजकल शामकी प्रार्थना सभाओंमें तक़रीर करनेके लिअे या दिल्लीके अपने कामके सिलसिलेमें कोअी ज़रूरत पड़ने पर ही वे अपना मौन तोड़ते हैं।

अुनकी मौन प्रार्थना

अपने मौनमें वे क्या सोचा करते हैं? अिसकी अेक अुड़ती झलक तब दिखाअी दी, जब अुन्होंने सोमवारकी प्रार्थना-सभामें पढ़नेके लिअे अेक छोटा-सा सन्देश लिखकर दिया—"अिनसानका यह फ़र्ज़ है कि वह अीश्वरकी सृष्टिके सभी प्राणियोंका भला चाहे, और प्रार्थना करे कि भगवान् अुसे अैसा करनेकी ताक़त दे। सब प्राणियोंका भला चाहनेमें ही अिनसानका अपना भला है। जो अपना या अपनी क़ौमका ही भला चाहता है, वह ख़ुदग़रज़ है। अुसका कभी भला नहीं होता।" गांधीजीने कहा कि अिनसानके लिअे यह ज़रूरी है कि जिस बातको वह ख़ुद अच्छी समझता है, और जो दर असल अुसके लिअे अच्छी है, अुसके फ़र्क़को वह समझ ले।

अच्छी फ़सल

अगर श्री कनु गांधीके तीसरे कताअी-क्लासको, जो ६ दिन चलकर पिछले शनीचरके दिन ख़त्म हुआ, अेक निशानी माना जाय, तो कहना होगा कि नतीजा बहुत अच्छा आ रहा है। अगर कोअी कमी है, तो काम करनेवालोंकी है।

क्लासमें २२ बहनें और २८ भाअी दाख़िल हुअे, क्योंकि अिससे ज़्यादा लोगोंको वे लेना नहीं चाहते थे। अिस बारके अिम्तहानकी अेक ख़ूबी यह थी कि परीक्षार्थी दूसरी जगह चलनेवाले दो क्लासोंसे भी आये थे। अुनमेंसे अेक क्लास हरिजन बहनोंके लिअे खोला गया था। २० बहनें वहाँ सीखती थीं। अुनमेंसे ७ अिम्तहानमें बैठीं। १२ बहनोंको दूसरे केन्द्रमें तालीम दी गअी थी। अुनमेंसे ३ परीक्षामें शामिल हुअीं। यह परीक्षा १½ घण्टे तक चली, जिसमें कताअी तककी सारी कियायें शामिल थीं। नतीजा यह रहा—

२२ भाअी-बहनोंने सब क्रियाओंके साथ ५० तार काते। ९ने ८०से अूपर तार निकाले और ८ने १००से अूपर तार काते। सूतका नम्बर १२से ३० तक था।

पूरा कोर्स लेनेवालोंमें 'न्यूज़ क्रॉनिकल' लन्दनके पत्रकार मि० नॉर्मन क्लिफ और 'न्यूयार्क पोस्ट'के पत्रकार मि० अेण्ड्रयू फ्रीमैन भी थे। दोनों बड़े धीरजके साथ ज़मीन पर बैठते और अपनी बनाअी हुअी पूनियोंसे अेक-सा सूत कातते थे। दोनोंने चरखे ख़रीद लिये हैं, और दोनों हमेशा कातनेकी अुम्मीद रखते हैं।

भंगी-बस्तीमें अब और कताअी क्लास नहीं चलेगा। लेकिन जिन्होंने यह कला सीख ली है, अुनमेंसे कुछ अपनी-अपनी जगहोंमें क्लास खोल रहे हैं। वार्ड नं० ९की ज़िला कमेटी अेक चरखा-क्लब और अेक कताअीका क्लास १६ अक्तूबरसे खोल रही है।

नअी दिल्ली, १५-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

टिप्पणियाँ

अंग्रेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दकोश

अेक भाअीने दिल्लीकी भंगी-बस्तीमें मुझसे पूछा—"अब 'हरिजनसेवक'में यह शब्दकोश (लुग़त) क्यों नहीं निकलता?" मैंने अुनसे कहा कि वह सिर्फ़ 'हरिजन'में छपता है। बेचारे बहुत मायूस हुअे। मैंने कहा—"वह अंग्रेज़ी जाननेवालोंके लिअे है। अिसलिअे 'हरिजनबन्धु' और 'हरिजनसेवक'में नहीं छपता। शुरूमें ग़लतीसे छपा था। ठीक होता, अगर अिसका ज़िक्र 'हरिजनबन्धु' और 'हरिजनसेवक'में कर दिया जाता। जो लोग चाहें वे डाकख़र्चके साथ डेढ़ आनेके डाक-टिकट भेजकर 'हरिजन'के शब्दकोशवाले पन्ने मँगवा सकते हैं। पिछले अंक भी मिल सकेंगे।"

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६ मो० क० गांधी

अनुचित

मद्रास प्रान्तसे अेक भाअी लिखते हैं कि कांग्रेसवालोंने कअी जगह गांधी-जयन्तीके लिअे रुपया अिकट्ठा किया। लोगोंने काफ़ी दिया भी। लेकिन अिस रुपयेके हिसाबकी जाँच नहीं हुअी। वह किस तरह ख़र्च किया गया, सो लोग नहीं जानते।

अगर यह सही है, तो बहुत ही बुरा है। ख़ैरात या दानमें मिला रुपया जनताका रुपया है। गांधीजी बार-बार कह चुके हैं कि अुसे अमानत समझकर बड़ी सावधानीसे जनताके लिअे ही ख़र्च करना चाहिये। अुसकी कौड़ी-कौड़ीका हिसाब तो देना ही है।

नअी दिल्ली, ११-१०-'४६ अमृतकुँवर

अेजण्टोंसे

मेहरबानी करके नीचे लिखी बातों पर ध्यान दें—

१. याद रखिये कि आपको हमारे यहाँ अपनी माँगके मुताबिक़ **दो महीनोंके** दाम पेशगी जमा कराने हैं। अिनमेंसे अेक महीनेकी रक़म यहाँ क़ायमी तौर पर जमा रहेगी, और बाक़ी चालू खातेमें जमा होगी। हर हफ़्ते भेजी जानेवाली कॉपियोंके दाम चालू खातेसे अुठाये जायँगे।

२. अेजण्ट आम तौर पर अमानतके पैसे चेकसे भेजते हैं। मेहरबानी करके ख़याल रखिये कि हम चेक नहीं लेते। चुनाँचे आप अपनी रक़म मनीऑर्डर, पोस्टल ऑर्डर या बैंक ड्राफ्टके ज़रिये ही भेजिये।

व्यवस्थापक

विषय-सूची

			पृष्ठ
चरखा कैसे चले?	...	कनु गांधी	३५७
विकेन्द्रीकरण	...	गांधीजी	३५७
हिन्दुस्तानमें डेरीका धन्धा	...	अमृतकुँवर	३५८
डॉ० लोहिया	...	गांधीजी	३५९
सच्चा हिन्दुस्तान	...	गांधीजी	३६०
सवाल—जवाब	...	गांधीजी	३६०
हिन्दू पानी और मुसलमान पानी	...	गांधीजी	३६१
गले लगाकर मरे	...	गांधीजी	३६१
हफ़्तेवार खत	...	प्यारेलाल	३६२
टिप्पणियाँ			
अंग्रेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दकोश	...	मो० क० गांधी	३६४
अनुचित	...	अमृतकुँवर	३६४

www.vinoba.in